



प्रेस विज्ञप्ति

**'क्या कोयले के बिना स्टील का उत्पादन किया जा सकता है? भारत के स्थायी भविष्य को आकार देने वाला प्रश्न': प्रो. बी.के. मिश्रा**

**आईआईटी भुवनेश्वर में 'संसाधन उपयोग के लिए हरित और सतत मार्गों की ओर' विषय पर टॉक का आयोजन किया गया**

**भुवनेश्वर, 18 सितंबर 2025:** "भारत अपने खनिज संसाधनों के उपयोग में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। धातुओं की बढ़ती मांग अपरिहार्य है, लेकिन निष्कर्षण के पर्यावरणीय प्रभावों पर पुनर्विचार करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है," आईआईटी भुवनेश्वर के प्रतिष्ठित विजिटिंग प्रोफेसर और आईआईटी गोवा के पूर्व निदेशक प्रोफेसर बी के मिश्रा ने कहा। यह टॉक संस्थान द्वारा राष्ट्रीय इंजीनियर्स दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम ने इंजीनियरों के योगदान को याद किया और भविष्य के लिए टिकाऊ मार्गों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

आईआईटी भुवनेश्वर में "संसाधन उपयोग के लिए हरित और सतत मार्गों की ओर" पर एक व्याख्यान देते हुए, प्रोफेसर मिश्रा ने भारत की संसाधन रणनीति के भविष्य पर प्रासंगिक सवाल उठाए - क्या कोयले के बिना स्टील का उत्पादन किया जा सकता है, अलौह धातुओं और दुर्लभ पृथ्वी की बढ़ती मांग को कैसे पूरा किया जा सकता है, और महत्वपूर्ण खनिजों का एक लचीला आधार बनाने के लिए किन उपायों की आवश्यकता है।

उन्होंने आगे संसाधन प्रतिमानों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया और एनोड स्लाइम, फॉस्फोजिप्सम, फ्लाइ ऐश और माइन टेलिंग्स जैसे औद्योगिक उप-उत्पादों को रीसाइक्लिंग और वैल्यूएज करके रैखिक से परिपत्र मॉडल में स्थानांतरित करने का आह्वान किया। उन्होंने हरित नवाचारों, द्वितीयक स्रोतों की खोज और न्यूनतम पारिस्थितिक ऋण के साथ संसाधनों को सुरक्षित करने वाली प्रथाओं का भी आग्रह किया।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हालांकि तत्काल उत्तर अस्पष्ट हो सकते हैं, सही प्रश्न पूछने और नवीन और टिकाऊ प्रथाओं की खोज से औद्योगिक विकास और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के बीच संतुलन बनाने में मदद मिलेगी।

इस अवसर पर बोलते हुए, संस्थान के निदेशक प्रो. श्रीपाद कर्मलकर ने छात्रों से 'बहुविषयक' दृष्टिकोण के मूल्य को समझने का आग्रह किया। उन्होंने कहा: "वास्तविक दुनिया की समस्याएं प्रकृति में बहु-विषयक हैं। इसलिए, छात्रों को लीक से हटकर सोचना चाहिए।" उन्होंने छात्रों से उद्यमिता में रुचि विकसित करने को भी कहा, ताकि वे समाज की भलाई में योगदान दे सकें।

प्रारंभ में, प्रो. दिनाकर पासला, डीन (प्रायोजित अनुसंधान एवं औद्योगिक परामर्श) ने स्वागत भाषण दिया और मुख्य अतिथि का परिचय दिया। इस कार्यक्रम को संस्थान के डीन, रजिस्ट्रार, वरिष्ठ संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और भारी संख्या में छात्र आबादी ने देखा।